PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Navbharat Times, Delhi
Wednesday 25th November 2015, Page: 15
Width: 34.26 cms, Height: 9.75 cms, a3r, Ref: pmin.2015-11-25.50.75

ब्रिक्स देशों के बाजारों में भारतीय औषधियों की मांग बढ़ती जा रही है

रूस में सक्रिय भारत के दवा-उत्पादकों को आशा है कि ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन में सहयोग बढ़ने पर उनकी दवाइयों की बिक्री बढ़ जाएगी।

अलिक्साब्द्रा कात्स
आरआईबीआर

दुनिया भर में दवाइयों के आधे से ज्यादा उपभोक्ता ब्रिक्स के पांच सदस्य देशों यानी ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिणी अफ्रीका में रहते हैं। इसके अलावा विकासशील देशों में दवाइयों का बाजार भी बड़ी तेजी से विकसित हो रहा है। एन०टी०सी० फ़ार्मा के विशेषज्ञों के अनुसार, वर्ष 2018 तक चीन में औषध बाजार 170 अरब डॉलर का होगा, जबकि ब्राजील में 41 अरब डॉलर से ज्यादा की दवाइयां बिकने लगेंगी तथा भारत और रूस में भी दवाइयों की बिक्री हर देश में 26 अरब डॉलर से ज्यादा की होगी।

पिछले एक दशक में जेनेरिक दवाइयों के सबसे बड़े उत्पादकों के एक देश के रूप में भारतीय दवाइयों की अमरीका और यूरोप के देशों के अलावा ब्रिक्स के देशों में भी बड़ी मांग हैं। जेनेरिक दवाइयों का मतलब उन ब्रांडेड दवाइयों से है, जिनके पेटेंट की अवधि पूरी हो चुकी है और जिनका उत्पादन अब दुनिया में कोई भी कर सकता है। भारत इन दवाइयों के लिए नए बाजार खोज रहा है। एम०सी० किंसे एंड कंपनी के अनुसार सन् 2012 से 2020 के बीच भारतीय कंपनियों का औषधि बाजार 12.1 प्रतिशत बढ़कर 45 अरब डॉलर का हो जाएगा।

विशेषज्ञों के अनुसार, ब्रिक्स देशों में भारतीय दवा कंपनियों के लिए सबसे अधिक तेजी से विकसित होने वाला बाजार रूस का होगा। रूस के औषधि बाजार में भारत पहले ही छाया हुआ है। भारतीय कंपनियों ने रूसी दवा बाजार के 3 प्रतिशत से 15 प्रतिशत हिस्से पर कब्जा कर रखा है। अभी तक रूस में भारत की 800 से ज्यादा दवाइयों का पंजीकरण किया जा चुका है।

आर०एन०सी० फार्मा नामक कंपनी के विकास विश्लेषण निदेशक निकलाय बिसपालफ़ के अनुसार, रूसी बाजार में भारतीय कंपनियां इसलिए बड़ी तेजी से विकसित नहीं हो रही हैं क्योंकि रूस में रूसी दवा उद्योग के विकास की नीति - फार्मा-2020 चलाई जा रही है। यह नीति स्थानीय औषधि उत्पादन के विकास की ओर केंद्रित है। उसी समय इस नीति के अनुसार, भारतीय कंपनियां रूस में ही अपनी दवाओं का उत्पादन करके रूसी बाजार में बड़े पैमाने पर अपनी उपस्थिति बढ़ा सकती हैं।

निकलाय बिसपालफ़ ने बताया कि इस रणनीति के अनुसार विदेशी कंपनिया बड़े पैमाने पर रूस में निवेश कर रही हैं। आर्थिक संकट से ग्रस्त 2014 के सिर्फ एक वर्ष में ही करीब 20 कंपनियों ने रूस के सांक्त पितेरबुर्ग,

रूस चाहता है कि रूस में ही दवाओं का उत्पादन किया जाए।

कलूगा और यरास्लाव्ल प्रदेशों में अपनी दवा-फैक्ट्रियां लगाई हैं। हर कंपनी ने 10 करोड़ डॉलर से 20 करोड़ डॉलर तक इन फैक्ट्रियों में निवेश किया है।

जहां तक भारतीय निवेशकों की बात है तो स्थिति इतनी आशाजनक नहीं है हालांकि पिछले पांच सालों में रूस और भारत की प्रमुख कंपनियों ने औषध-उत्पादन के क्षेत्र में दर्जनों समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनके अनुसार अब तक ढेरों संयुक्त परियोजनाएं शुरू हो जानी चाहिए थीं, पर सिर्फ एक-दो परियोजनाओं पर ही काम चल रहा है।

इनमें यरास्लाव्ल प्रदेश में डॉ० रेड्डीज लेबारेटरीज और रूसी कंपनी आर० फार्मा द्वारा संयुक्त रूप से बनाया जा रहा दवाओं का वैज्ञानिक उत्पादन परिसर भी है।

एक बड़ी औषधि निर्माता कंपनी सन फ़ार्मा के प्रमुख दिलीप शांगवी ने रूस में स्थानीय दवा उत्पादन परियोजनाओं में निवेश करने की बात कही है। उल्लेखनीय है कि मार्च 2015 में सन फार्मा और रेनबाक्सी लेबारेटरीज का विलय हुआ है और रेनबाक्सी की दवाइयां रूस में खूब बिकती हैं।

1997 में विक्रम पूनिया द्वारा स्थापित फ़ार्मासिन्तेज़ नामक कंपनी आज रूस में टी०बी० की दवाइयां बनाने वाली एक सबसे बड़ी कंपनी है और वह सांक्त पितेरबुर्ग (सेंट पीटर्सबर्ग) में ट्यूमर-रोधी दवाइयों के वैज्ञानिक उत्पादन परिसर तथा इर्कूत्स्क में दवाइयों के उत्पादन की एक फैक्ट्री के साथ-साथ अनेक नई परियोजनाओं में निवेश कर रही है। इर्कूत्स्क में फ़ार्मासिन्तेज़ की एक दवा-फैक्ट्री पहले से ही काम कर रही है। रूस में दवाओं की एक बड़ी वितरक कंपनी 'एडवान्स ट्रेडिंग' रूस के बेलगोरद प्रदेश में अपने भारतीय साझेदार के सहयोग से ढाई करोड़ डॉलर की एक निवेश परियोजना पर काम कर रही है। कंपनी के कमर्शियल डायरेक्टर अंशुमान शर्मा का कहना है कि उनकी यह फ़ैक्ट्री सन् 2017 से दवाइयों का उत्पादन करने लगेगी।

भारतीय कंपनियां रूस में अपनी दवाओं का उत्पादन कर रही हैं

विश्लेषकों का कहना है कि रूस में दवाइयों का उत्पादन करने की रूस द्वारा सक्रिय रूप से चलाई जा रही नीति के बावजूद रूस के औषधि बाजार में विदेशी दवाइयों की बड़ी मांग है। डेलॉयट कंपनी के मास्को आफिस का कहना है कि 2014 से दिखाई देने वाली विकास की धीमी गति के बावजूद रूस एक ऐसा बड़ा यूरोपीय बाजार है, जिसमें विदेशी निवेशकों के लिए भारी संभावनाएं उपस्थित हैं।

Demand for Indian medicines goes up in BRICS members.